Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 10 | Issue : 4 | April 2024



प्रारंभिक शिक्षा में चित्र एकीकृत पाठ्यपुस्तकों का महत्व

राजेश कुमार निमेश

सह–आचार्य, मीडिया उत्पादन प्रभाग, सी आई ई टी, एन सी ई आर टी, दिल्ली

ABSTRACT

प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में चित्र आधारित पाठ्यपुस्तकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, जो विकास के नए–नए आयामों से बच्चों को प्रभावित करती है। मुख्य रूप से, चित्र आधारित पाठ्यपुस्तकें विविध शब्दावली और सही व्याकरणिक संरचनाओं से परिचित कराकर भाषा विकास के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती हैं, जिससे प्रवाह और संचार कौशल में वृद्धि होती है। इसी प्रकार, प्रेरणा, आलोचनात्मक सोच, समस्या–समाधान जैसी क्षमताओं और शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक समझ एवं कौशल को बढ़ावा देती है। पुस्तकों में बने रंग–बिरंगे चित्र बच्चों में कल्पना और रचनात्मकता को प्रज्वलित करती हैं, जोकि बच्चों को उनकी अलग दुनिया और विचारों में ले जाती हैं, जबकि जटिल भावनाओं और नैतिक दुविधाओं का पता लगाने वाली चित्रित कहानियों के माध्यम से भावनात्मक विकास को बढ़ावा देती हैं। इसलिए इस आलेख में माध्यम से प्रारंभिक स्तर पर चित्र आधारित पाठ्यपुस्तकों के महत्व, पाठ्यपुस्तकों में चित्रों के प्रकार, आकर, माप और रंग, चित्रों का सीखने पर प्रभाव, पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों में प्रकाशित चित्रों, डिजिटल छवियाँ एवं पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का शैक्षिक उपियोगिताओं को प्रस्तुरत किया है।

मुख्य शब्दः आधारभूत शिक्षा, संज्ञानात्मक विकास, भाषा अर्जन, दृश्य जुड़ाव, सांस्कृतिक जागरूकता, प्रारंभिक साक्षरता कौशल

परिचय



आधारभूत स्तर पर पुस्तकेंरूचित्र एकीकृत पाठ्यपुस्तकें प्रारंभिक शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये पाठ्यपुस्तकें बच्चों के लिए अध्ययन को रोचक और आकर्षक बनाती हैं। चित्रों की सहायता से जटिल विषयों को सरल और समझने योग्य बनाया जाता है, जिससे बच्चों का ध्यान केंद्रित रहता है। त्रिएका, एस (2017) के अनुसार, फोटोग्राफिक चित्र छात्रों में स्मृति प्रतिधारण और समझ में सुधार करते हैं क्योंकि वे अमूर्त अवधारणाओं के ठोस दृश्य प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं। इसके अलावा, चित्र बच्चों की कल्पना शक्ति को भी बढ़ाते हैं और उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। फराह (2009) ने पाया कि पाठ्यपुस्तकों में चित्रों को शामिल करने से विशेष रूप से स्थानिक तर्कशक्ति की आवश्यकता वाले विषयों में छात्रों की भागीदारी और समझ में काफी सुधार होता है। इस प्रकार की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए किया जाता है, जिससे वे शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उनकी शिक्षा का आधार मजबूत हो सके। उदाहरणः मान लें, कक्षा 1 की हिंदी पाठ्यपुस्तक में हमारा बगीचा नामक अध्याय लिया जाए। इस अध्याय में बच्चों को बगीचे की चीजें सिखाने के लिए चित्रों का उपयोग किया गया है। जिसमें

पृष्ठभूमि चित्रः एक सुंदर बगीचे का रंगीन चित्र जिसमें पेड़, फूल, घास, झूला, और पक्षी दिखाए गए हैं।

व्यक्तिगत चित्रः

''एक पेड़ का चित्र, जिसमें फल और पत्तियां स्पष्ट दिख रही हैं।
विभिन्न रंगों के फूलों के चित्र, जिनके नाम नीचे लिखे गए हैं।
झूले पर झूलते बच्चों का चित्र, जिनके चेहरे पर मुस्कान है।''

क्रियात्मक चित्रः

''बच्चे पानी का डिब्बा लिए हुए पौधों को पानी देते हुए।
बच्चे झूले पर झूलते हुए।
बच्चे फूलों की क्यारी में काम करते हुए।''

अभ्यासः

''चित्र देखकर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

इस बगीचे में कितने पेड़ हैं?
फूलों के कितने रंग दिखाई दे रहे हैं?
बच्चे झूले पर क्या कर रहे हैं?''

इस प्रकार, चित्रों का उपयोग करके बच्चों को बगीचे के बारे में सिखाना न केवल उन्हें विषय के प्रति रुचि बनाए रखते है, बल्कि उनकी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता को भी बढ़ावा देते है।

इसके साथ– साथ पुस्तकें कई कारणों से सीखने और विकास के आधारभूत चरणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं:

- **भाषा विकासः** पुस्तकें बच्चों को समृद्ध शब्दावली और उचित व्याकरण से परिचित कराती हैं, जिससे भाषा अधिग्रहण और प्रवाह में सहायता मिलती है।
- **संज्ञानात्मक विकासः** पुस्तकें पढ़ने से मस्तिष्क उत्तेजित होता है, आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान कौशल और समझने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है।
- **कल्पना और सृजनात्मकताः** पुस्तकें पाठकों को उनके आसपास के परिवेश से परे विभिन्न दुनियाओं, परिदृश्यों और विचारों में ले जाकर सृजनात्मकता और कल्पना को प्रेरित करती हैं।
- **भावनात्मक विकासः** पुस्तकों में कहानियां अक्सर जटिल भावनाओं और नैतिक दुविधाओं से निपटती हैं, जिससे बच्चों को अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने तथा दूसरों के साथ सहानुभूति रखने में मदद मिलती है।
- **ज्ञान और सूचनाः** पुस्तकें विभिन्न विषयों के ज्ञान का भंडार हैं, जो विज्ञान, इतिहास, गणित आदि जैसे क्षेत्रों में आधारभूत समझ प्रदान करती हैं।
- **सांस्कृतिक जागरूकताः** पुस्तकें बच्चों को विविध संस्कृतियों, परंपराओं और दृष्टिकोणों से परिचित कराती हैं, तथा विविधता के प्रति सहिष्णुता और प्रशंसा को बढ़ावा देती हैं।
- **संबंध और सामाजिक कौशलः** एक साथ किताबें पढ़ने से बच्चों और देखभाल करने वालों के बीच संबंध मजबूत होता है, तथा बारी–बारी से बात करने और सुनने जैसे सामाजिक कौशल भी सिखाए जाते हैं।

प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यपुस्तकों में छवियों के प्रकार

सीखने के बुनियादी चरणों पर लक्षित पुस्तकों में, जुड़ाव, समझ और सीखने को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की छवियों का रणनीतिक रूप से उपयोग किया जाता है। यहाँ कुछ सामान्य प्रकार दिए गए हैं:



चित्रणः ये चित्र या दृश्य चित्रण हैं जो पाठ से दृश्यों, पात्रों या अवधारणाओं को सीधे दर्शाते हैं। वे बच्चों को बताई जा रही कहानी या जानकारी को कल्पना करने में सहायता करते हैं।

तस्वीरेंः वास्तविक जीवन की छवियों का उपयोग वस्तुओं, स्थानों, जानवरों या लोगों को यथार्थवादी तरीके से दिखाने के लिए किया जाता है। वे पुस्तक की सामग्री और वास्तविक दुनिया के बीच सीधा संबंध प्रदान करते हैं।

चिह्न और प्रतीकः सरल, शैलीगत छवियों या प्रतीकों का उपयोग अवधारण ााओं या क्रियाओं को दर्शाने के लिए किया जाता है, विशेष रूप से प्रारंभिक शैक्षिक पुस्तकों में जो संख्याओं, रंगों, आकृतियों आदि जैसी बुनियादी अवधारणाओं पर केंद्रित होती हैं।

आरेख और चार्टः इन दृश्य उपकरणों का उपयोग जानकारी को व्यवस्थित करने, प्रक्रियाओं को समझाने या विभिन्न तत्वों की तुलना करने के लिए किया जाता है। वे अधिक जटिल विचारों या संबंधों की समझ को बढ़ाते हैं।

इंटरएक्टिव छवियाँः कुछ पुस्तकें में उठाने के लिए फ्लैप, महसूस करने के लिए बनावट या चलने वाले हिस्से जैसे इंटरएक्टिव तत्व शामिल होते हैं। ये बच्चों को गतिज रूप से आकर्षित करते हैं और हाथों से खोज करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

पैटर्नयुक्त चित्रः बहुत छोटे बच्चों के लिए पुस्तकों में, उच्च कंट्रास्ट वाले पैटर्नयुक्त चित्रों (जैसे काले और सफेद चित्र या बोल्ड, कंट्रास्टिंग रंग) का उपयोग ध्यान आकर्षित करने और दृश्य विकास को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है।

भावनात्मक और अभिव्यंजक छवियाँः चेहरे के भाव, शारीरिक भाषा या रंगों के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करने वाली छवियाँ बच्चों को पात्रों की भावनाओं और अनुभवों को समझने और उनके साथ सहानुभूति रखने में सहायता करती हैं।

पाठ्यपुस्तक चित्रों में आकार, माप और रंगों का समायोजन

एक प्रभावी चित्र आधारित पाठ्यपुस्तक में चित्रों का आकर, माप और रंगो का समायोजन बच्चों के अधिगम में महत्वपूर्ण योगदान निभाता है। इस लिए एनसीफ 2023 ने कहा है कि पाठ्यपुस्तक की प्रस्तुति फ़ॉन्ट आकार, छवियों, रेखाचित्रों, प्रयुक्त रंगों और इन तीनों के सम्मिश्रण पर निर्भर करती है, उदाहरण के लिए, प्रारंभिक कक्षाओं में पाठ्य सामग्री बड़ी संख्या में छवियों के साथ सीमित हो सकती है, फ़ॉन्ट का आकार बड़ा होना चाहिए और उपयोग किए गए चित्र संवेदनशील और समावेशी होने चाहिए।

आकृतियाँ:

- **सरल ज्यामितीय आकार व उदाहरणः** बच्चों के लिए एक चित्र पुस्तक में एक पृष्ठ पर एक बड़ा, लाल वृत्त हो सकता है जो सूर्य या गेंद का प्रतिनिधित्व करता है।
- **गोल किनारों वाली मूल आकृतियाँ व उदाहरणः** प्रारंभिक षिक्षा के लिए एक बोर्ड पुस्तक में जानवरों के चित्र हो सकते हैं, जैसे गोल किनारों वाला चौकोर घर, या त्रिकोण आकार का पेड़।
- **पहचानने योग्य वस्तुएँ व उदाहरणः** वाहनों के बारे में एक पुस्तक में एक आयताकार बस या एक बेलनाकार अग्नि हाइड्रेंट की छवियाँ शामिल हो सकती हैं।

आकार

- **बड़ा और स्पष्ट व छवियां:** आमतौर पर इतनी बड़ी होती हैं कि ध्यान आकर्षित कर सकें और आसानी से पहचानी जा सकें। उदाहरणः बच्चों के लिए एक गिनती की किताब में, प्रत्येक पृष्ठ पर एक बड़ी वस्तु हो सकती है, जैसे एक बड़ी नीली व्हेल या एक बड़ी पीली बत्तख।
- **बातचीत के लिए विविध आकारः** अन्वेषण और सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए इंटरैक्टिव पुस्तकों में अक्सर अलग—अलग आकार की छवियां होती हैं। उदाहरणः शिशुओं के लिए एक स्पर्श—और—अनुभव पुस्तक में बनावट के साथ छोटे और बड़े चित्रों का मिश्रण शामिल हो सकता है, जैसे एक छोटी रोयेंदार बिल्ली का बच्चा और एक बड़ा नरम तकिया।

रंग

- **उज्ज्वल और बोल्डः** चमकीले रंगों का उपयोग छोटे बच्चों का ध्यान आकर्षित करने और दृश्य रुचि को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है। उदाहरणः जानवरों के बारे में एक चित्र पुस्तक में एक चमकीले हरे मेंढक, एक ज्वलंत नारंगी बाघ, या एक गहरे पीले सूरज की जीवंत छवियां हो सकती हैं।
- **दृश्य विकास के लिए उच्च कंट्रास्ट**
  दृश्य विकास में सहायता के लिए बहुत छोटे शिशुओं के लिए पुस्तकों में काले—सफेद या उच्च—विपरीत चित्रों का उपयोग किया जाता है। हॉलमकविस्ट ओलांदेर (2014) के अनुसार, उच्च कंट्रास्ट वाले चित्र छात्रों का ध्यान आकर्षित करते हैं और सामग्री की बेहतर समझ को सुगम बनाते हैं। उदाहरणः एक नवजात शिशु की पहली पुस्तक में धारीदार ज़ेबरा या धब्बेदार पांडा की सरल श्वेत—श्याम छवियां हो सकती हैं।
- **कहानी सुनाने के लिए रंगीन चित्र**
  कथा पुस्तकों में दृश्यों, पात्रों और भावनाओं को चित्रित करने के लिए विविध रंगों वाले चित्रों का उपयोग किया जाता है। उदाहरणः प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक कहानी की पुस्तकं में एक खुशनुमा लाल सेब, एक गहरे नीले सागर, या एक धूप वाले पीले समुद्र तट की रंगीन छवियां हो सकती हैं।

समग्र डिजाइन विचार

- **स्पष्टता और सरलताः** चित्रों को स्पष्ट और आसानी से पहचानने योग्य बनाया जाए ताकि प्रारंभिक शिक्षा और समझ में सहायता मिल सके।
- **आकर्षक और मनमोहकः** आकृतियों, आकारों और रंगों के संयोजन का उद्देश्य एक आकर्षक दृश्य अनुभव बनाना है जो बच्चों को सामग्री के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

डिज़ाइन तत्व सामूहिक रूप से प्रारंभिक साक्षरता कौशल, संज्ञानात्मक विकास और छोटी उम्र से ही पढ़ने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने में पुस्तकों की प्रभावशीलता में योगदान करते हैं।

पुस्तकों में चित्रों का छात्रों के प्रारंभिक स्तर पर सीखने पर प्रभाव

सीखने के आधारभूत चरणों के लिए डिज़ाइन की गई पुस्तकों में छवियों को शामिल करना छात्रों के सीखने के अनुभवों और समग्र संज्ञानात्मक विकास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन दृश्य तत्वों को सावधानीपूर्वक चुना जाता है और प्रारंभिक बचपन की शिक्षा के दौरान समझ, जुड़ाव और आवश्यक कौशल के अधिग्रहण का समर्थन करने के लिए एकीकृत किया जाता है।

- **संज्ञानात्मक जुड़ाव और समझ**
  आधारभूत पुस्तकों में चित्र दृश्य सहायता के रूप में काम करते हैं जो पाठ्य सूचना को पूरक बनाते हैं, जिससे युवा शिक्षार्थियों को अवधारणाओं को अधिक प्रभावी ढंग से समझने में सहायता मिलती है। चित्र और आरेख जैसे दृश्य अतिरिक्त संदर्भ प्रदान करके और स्मृति प्रतिधारण में सहायता करके गहरी समझ को सुविधाजनक बनाते हैं। उदाहरण के लिए, विभिन्न जानवरों को उनके नामों के साथ चित्रित करने वाली एक चित्र पुस्तक बच्चों को बोली जाने वाली भाषा को दृश्य अभ्यावेदन से जोड़ने में सहायता करती है, जिससे शब्दावली अधिग्रहण और समझ कौशल को मजबूत किया जाता है।

- **जिज्ञासा और अन्वेषण को प्रोत्साहित करना**
  किताबों में दृश्य जिज्ञासा को उत्तेजित करते हैं और युवा छात्रों के बीच सक्रिय अन्वेषण को प्रोत्साहित करते हैं। हॉचपॉचलर और अन्य (2012) के अनुसार पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का एकीकरण मानसिक मॉडलों के निर्माण में सहायता करता है, जिससे समझ और जानकारी के प्रतिधारण में सुधार होता है। बच्चे स्वाभाविक रूप से रंगीन और आकर्षक छवियों की ओर आकर्षित होते हैं, जो उन्हें प्रश्न पूछने, अवलोकन करने और आगे की खोज करने के लिए प्रेरित करते हैं। दृश्यों के साथ यह बातचीत खोज की भावना को बढ़ावा देती है और नई जानकारी और उनके मौजूदा ज्ञान के बीच संबंध बनाने की उनकी क्षमता को बढ़ाती है। उदाहरण के लिए, चलने योग्य भागों या बनावट वाली इंटरैक्टिव किताबें स्पर्श संबंधी अन्वेषण को आमंत्रित करती हैं, संज्ञानात्मक सीखने के साथ—साथ संवेदी विकास का समर्थन करती हैं।

- **भाषा विकास में सहायता**
  भाषा के विकास में छवियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि वे दृश्य संकेत प्रदान करती हैं जो भाषा को समझने और व्याख्या करने में सहायता करती हैं। दृश्य समर्थित पाठों के शुरुआती संपर्क से बच्चों को बुनियादी साक्षरता कौशल विकसित करने में सहायता मिलती है, जैसे शब्दों को डिकोड करना और वाक्यविन्यास को समझना। इसके अतिरिक्त, भावनाओं या क्रियाओं को दर्शाने वाले चित्र युवा शिक्षार्थियों को अमूर्त अवधारणाओं, जैसे भावनाओं या क्रियाओं को मूर्त और सुलभ तरीके से समझने में सहायता करते हैं। यह दृश्य सुदृढ़ीकरण न केवल शब्दावली को समृद्ध करता है बल्कि कथा संरचनाओं और कहानी कहने की परंपराओं की समझ को भी मजबूत करता है।

- **आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल विकसित करना**
  आधारभूत पुस्तकों में दृश्य अक्सर ऐसे परिदृश्यों को दर्शाते हैं जिनमें व्याख्या और अनुमान की आवश्यकता होती है, जिससे आलोचनात्मक सोच और समस्या—समाधान कौशल को बढ़ावा मिलता है। उदाहरण के लिए, किसी चरित्र की क्रियाओं को दर्शाने वाली छवियों का एक क्रम बच्चों को परिणामों की भविष्यवाणी करने, घटनाओं को क्रमबद्ध करने और कारण—और—प्रभाव संबंधों को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस तरह के दृश्य आख्यान कम उम्र से ही तार्किक तर्क और विश्लेषणात्मक कौशल के विकास का समर्थन करते हैं, जिससे छात्रों को शिक्षा के बाद के चरणों में अधिक जटिल सीखने के कार्यों के लिए तैयार किया जाता है। फोल्ड्स (2013) ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पाठ्यपुस्तकों में चित्र छात्रों की लैंगिक भूमिकाओं के प्रति धारणाओं और दृष्टिकोणों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो उनके सामाजिक विकास को प्रभावित करते हैं।

- **सांस्कृतिक जागरूकता और विविधता को बढ़ावा देना**



विविध और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक छवियों वाली पुस्तकें युवा शिक्षार्थियों को विभिन्न दृष्टिकोणों, परंपराओं और जीवन शैली से परिचित कराती हैं। विभिन्न पृष्ठभूमियों के पात्रों के दृश्य प्रतिनिधित्व सहानुभूति और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देते हैं, समावेशिता और विविधता के लिए प्रशंसा को बढ़ावा देते हैं। विविध छवियों के संपर्क के माध्यम से, बच्चे एक व्यापक विश्वदृष्टि विकसित करते हैं और अपने तत्काल परिवेश से परे सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और अनुभवों के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। गुड और अन्य (2010) ने पाया कि पाठ्यपुस्तकों में रूढ़िवादी विरोधी चित्र पारंपरिक रूप से विपरीत लिंग द्वारा वर्चस्व वाले विषयों में छात्रों के प्रदर्शन और रुचि को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

- **सीखने की प्रेरणा और आनंद को बढ़ाना**

प्रारंभिक पुस्तकों में चित्र दृश्य रूप से आकर्षक और आकर्षक शिक्षण अनुभव बनाते हैं जो छात्रों के बीच प्रेरणा और आनंद को बढ़ाते हैं। दृश्य कहानी सुनाना बच्चों की रुचि को आकर्षित करता है, जिससे सीखने के सत्र अधिक संवादात्मक और उत्तेजक बन जाते हैं। दृश्यों के साथ यह सकारात्मक जुड़ाव न केवल पढ़ने के प्रति प्रेम को बढ़ाता है बल्कि दृश्य कला और रचनात्मकता के लिए आजीवन प्रशंसा को भी पोषित करता है।

डिजिटल छवियों की तुलना में पाठ्यपुस्तकों में छवियों का प्रभाव

पारंपरिक प्रिंट पुस्तकों में छवियों का प्रभाव बनाम डिजिटल छवियों का प्रभाव सीखने और संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करने के मामले में काफी भिन्न हो सकता है, खासकर बुनियादी चरणों में। इन दो माध्यमों के प्रभावों की तुलना करते समय कुछ मुख्य विचार इस प्रकार हैं:

पारंपरिक पुस्तकों में छवियाँ

फोले और अन्य (2008) ने अध्ययन में पाया कि पाठ्यपुस्तकें जिनमें चित्र और हैंड्स–ऑन गतिविधियाँ शामिल होती हैं, छात्रों की रुचि और विज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को केवल–पाठ पाठ्यक्रमों की तुलना में बढ़ती हैं। जैसे कि

- **स्पर्शनीय जुड़ावः** मुद्रित पुस्तकों में छवियां एक स्पर्शनीय अनुभव प्रदान करती हैं जो कई इंद्रियों, विशेष रूप से स्पर्श और दृष्टि को जोड़ती हैं। छोटे बच्चों को अक्सर पुस्तकों के साथ शारीरिक रूप से बातचीत करने, पन्ने पलटने और बनावट की खोज करने से लाभ होता है, जो संवेदी विकास और मोटर कौशल को बढ़ा सकता है।
- **केंद्रित ध्यानः** प्रिंट पुस्तकें आम तौर पर एक समय में एक पृष्ठ या प्रसार प्रस्तुत करती हैं, जिससे बच्चों को बिना किसी विकर्षण के विशिष्ट छवियों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति मिलती है। यह केंद्रित जुड़ाव बच्चों को दृश्य कथाओं में खुद को डुबोने के दौरान एकाग्रता और समझ का समर्थन कर सकता है।
- **शारीरिक संपर्कः** भौतिक पुस्तकें बच्चों को चित्रों के साथ सक्रिय रूप से छेड़छाड़ करने और जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, जैसे चित्रों की ओर इशारा करना, अपनी उंगलियों से आकृतियाँ बनाना और पन्ने पलटना। ये क्रियाएँ व्यावहारिक सीखने के अनुभवों को बढ़ावा देती हैं जो स्मृति प्रतिधारण और संज्ञानात्मक विकास में सहायता करती हैं।
- **माता–पिता और बच्चों के बीच बातचीतः** पारंपरिक प्रिंट पुस्तकों को साझा करने में अक्सर देखभाल करने वालों और बच्चों के बीच घनिष्ठ शारीरिक निकटता और इंटरैक्टिव रीडिंग सत्र शामिल होते हैं। यह बंधन अनुभव भावनात्मक संबंधों, बातचीत के माध्यम से भाषा विकास और सामाजिक–भावनात्मक कौशल को बढ़ावा देता है।
- **दृश्य अपीलः** पुस्तकों में मुद्रित चित्रों में एक अद्वितीय सौंदर्य अपील हो सकती है, जिसमें बनावट, रंग और विवरण होते हैं जो डिजिटल समकक्षों की तुलना में अधिक जीवंत और स्पर्शनीय हो सकते हैं। यह दृश्य समृद्धि युवा पाठकों में कल्पना और रचनात्मकता को उत्तेजित कर सकती है।

डिजिटल पुस्तकों में छवियाँ

जो और अन्य (2014) ने अध्ययन में पाया कि डिजिटल एकीकृत चित्रों वाली पाठ्यपुस्तकों को छात्रों द्वारा अधिक स्वीकार्यता मिलती है, जिससे बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन और सहभागिता होती है। जेंगा और अन्य (2015) ने अपने शोध में पाया कि विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा में डिजिटल एकीकृत चित्रों वाली पाठ्यपुस्तकें पारंपरिक केवल–पाठ सामग्री की तुलना में सीखने के परिणामों को अधिक प्रभावी ढंग से बढ़ाती हैं।क्योंकि इनमें

- **इंटरैक्टिव विशेषताएँः** ई–बुक या शैक्षणिक ऐप में डिजिटल छवियों में अक्सर एनिमेशन, ध्वनियाँ और स्पर्श–संवेदनशील प्रतिक्रियाएँ जैसे इंटरैक्टिव तत्व शामिल होते हैं। ये विशेषताएँ जुड़ाव को बढ़ा सकती हैं और तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान कर सकती हैं, जिससे सीखने के परिणामों को मजबूती मिलती है।
- **मल्टीमीडिया एकीकरणः** डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म स्थिर छवियों से परे मल्टीमीडिया तत्वों के एकीकरण की अनुमति देता है, जिसमें वीडियो, ऑडियो कथन और इंटरैक्टिव गेम शामिल हैं। यह मल्टीमीडिया दृष्टिकोण विभिन्न शिक्षण शैलियों को पूरा कर सकता है और कई तौर–तरीकों के माध्यम से समझ को बढ़ा सकता है।
- **अनुकूलनशीलता और वैयक्तिकरणः** डिजिटल प्रारूपों को व्यक्तिगत सीखने की प्राथमिकताओं और गति को समायोजित करने के लिए वैयक्तिकृत किया जा सकता है। समायोज्य फ़ॉन्ट आकार, कथन विकल्प और इंटरैक्टिव क्विज़ जैसी सुविधाएँ विविध शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकती हैं और पहुँच को बढ़ा सकती हैं।
- **वैश्विक पहुँचः** डिजिटल छवियाँ और ई–पुस्तकें शैक्षिक संसाधनों तक वैश्विक पहुँच प्रदान करती हैं, भौगोलिक बाधाओं को दूर करती हैं और दूरस्थ शिक्षा के अवसर प्रदान करती हैं। यह पहुँच शैक्षिक सामग्रियों तक समावेशिता और न्यायसंगत पहुँच को बढ़ावा दे सकती है।

- **प्रगति ट्रैकिंगः** डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म में अक्सर सीखने की प्रगति को ट्रैक करने की सुविधाएँ शामिल होती हैं, जिससे शिक्षकों और अभिभावकों को समय के साथ बच्चों की भागीदारी, समझ और कौशल विकास की निगरानी करने की सुविधा मिलती है। यह डेटा–संचालित दृष्टिकोण व्यक्तिगत सीखने की रणनीतियों और हस्तक्षेपों को सूचित कर सकता ळें

इसके साथ–साथ, फॉटरिस और अन्य (2016) के अनुसार पाठ्यपुस्तकों में गेमिफाइड चित्र और ग्राफिक्स छात्रों में प्रेरणा और सहभागिता को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं।

शैक्षिक उपयोग के लिए विचार

- **संतुलित दृष्टिकोणः** पारंपरिक प्रिंट पुस्तकों और डिजिटल छवियों दोनों के अपने–अपने लाभ और विचार हैं। एक संतुलित दृष्टिकोण जो प्रत्येक माध्यम की ताकत को जोड़ता है, छोटे बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों को अनुकूलित कर सकता है।
- **आयु उपयुक्तताः** प्रिंट और डिजिटल प्रारूपों के बीच चयन करते समय विकासात्मक चरणों, व्यक्तिगत सीखने की शैलियों और विशिष्ट शैक्षिक लक्ष्यों पर विचार किया जाना चाहिए। समग्र शिक्षा का समर्थन करने के लिए दोनों माध्यमों के मिश्रण से छोटे बच्चों को लाभ हो सकता है।
- **माता–पिता का मार्गदर्शनः** प्रारूप चाहे जो भी हो, पुस्तकों में चित्रों के शैक्षिक लाभों को अधिकतम करने के लिए पढ़ने की गतिविधियों में माता–पिता का मार्गदर्शन और सह–सहभागिता महत्वपूर्ण है। सामग्री पर सक्रिय रूप से चर्चा करना, प्रश्न पूछना और चित्रों को वास्तविक दुनिया के अनुभवों से जोड़ना सीखने के परिणामों को बढ़ा सकता है।

निष्कर्ष

चित्रों का विद्यार्थियों में प्राथमिक महत्त्व रहा चाहे वह पारंपरिक रूप में हो या डिजिटल रूप में, इसलिए विद्यार्थियों के पाठयचर्या, स्तर और रुचि को ध्यान में रखते हुए चित्रों का समायोजन होना चाहिए तथा समय–समय पर चित्रों के उनके स्तर, महत्त्व और मनोरंजन आधारित परिवर्तन भी होने चाहिए। इसी प्रकार से, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं एन सी एफ 2023 ने भी सभी स्तरों के विद्यार्थियों के लिए मनोरंजक एवं प्रेरणादायी पुस्तकें विकसित करने पर बल दिया है। इसलिए निरंतर विद्यार्थियों की रुचि और सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए चित्र आधारित शोध और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण होना चाहिए।

आलेख का शैक्षिक प्रभाव

- इस आलेख से विद्यार्थियों, अध्यापकों, अभिभावकों, पाठ्यचर्या निर्माताओं और राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्माताओं में भी चित्र आधारित पाठ्यपुस्तकों के प्रति अधिक समझ उत्पन्न होगी।
- प्रारंभिक बचपन की चित्र आधारित शैक्षिक पाठ्यपुस्तकों के साथ–साथ अन्य स्तरों पर वर्तमान और भविष्य की मांग को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य किया जा सकता है।
- पारंपरिक और डिजिटल पाठ्यपुस्तकों में दिए गए चित्रों के महत्त्व और स्तर पर भी शोध अध्ययन किया जा सकता है।

REFERENCES

1. Triacca, S. (2017). Teaching and learning with pictures: The use of photography in primary schools. Proceedings of the International and Interdisciplinary Conference IMMAGINI?, 1(9), 952.
2. Farha, N. W. (2009). An exploratory study into the efficacy of learning objects. The Journal of Educators Online, 6(2), 1–32.
3. Holmqvist Olander, M., Brante, E. W., & Nyström, M. (2014). The image of images as an aid to improve learning. An eye-tracking experiment studying the effect of contrasts in computer-based learning material. CSEDU 2014 – 6th International Conference on Computer Supported Education, 309–316.
4. Foulds, K. (2013). The continua of identities in postcolonial curricula: Kenyan students' perceptions of gender in school textbooks. International Journal of Educational Development, 33(2), 165–174.
5. Good, J. J., Woodzicka, J., & Wingfield, L. (2010). The effects of gender stereotypic and counter-stereotypic textbook images on science performance. The Journal of Social Psychology, 150(2), 132–147.
6. Jang, D., Yi, P., & Shin, I. (2015). Examining the effectiveness of digital textbook use on students' learning outcomes in South Korea: A meta-analysis. The Asia-Pacific Education Researcher, 25(1), 57–68.
7. Hochpöchler, U., et al. (2012). Dynamics of mental model construction from text and graphics. European Journal of Psychology of Education, 28(4), 1105–1126.
8. Foley, B. J., & Mcphee, C. (2008). Students' attitudes towards science in classes using hands-on or textbook-based curriculum. AERA, 1–12.
9. Fotaris, P., et al. (2016). Climbing up the leaderboard: An empirical study of applying gamification techniques to a computer programming class. Electronic Journal of E-Learning, 14(2), 94–110.
10. Joo, Y. J., et al. (2014). Structural relationships between variables of elementary school students' intention of accepting digital textbooks. In M. B. Nunes & M. McPherson (Eds.), Proceedings of the IADIS International Conference on Cognition and Exploratory Learning in the Digital Age. 19–26.
11. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/infocus_slider/NCF-School-Education-Pre-Draft.pdf
12. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
13. https://kv2calicutprimaryonlineclass2hinditb.blogspot.com/